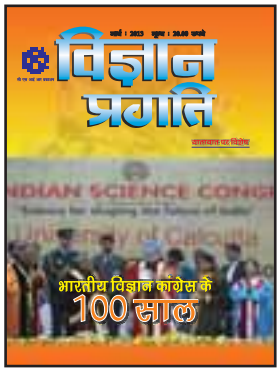

प्रशंसनीय लेखक

विज्ञान प्रगति के जनवरी 2013 के 'सवाल जब जब, जवाब तब तब' स्तंभ में डॉ. देवकी नंदन ने भारत की कुछ पुरानी करेंसियों (सिक्कों/नोटों) का दिलचस्प विवरण दिया जोकि वाकई प्रशंसनीय लगा। इसमें उन्होंने यह भी लिखा था कि भारत में कभी ढाई रूपये का भी नोट चलता था। यद्यपि पढ़ने पर यह बात शायद सामान्य पाठक को कुछ अविश्वसनीय लगे परंतु मैंने इसे गंभीरता से लिया और सिक्कों-नोटों के संग्रहण की अपनी आदत व रुचि के कारण इस नोट की खोज में जुट गया। कुछ ही महीनों में मेरी खोज रंग लाई और अंततः यह बात सुस्थापित हो गई कि डॉ. देवकी नंदन एक प्रामाणिक और मेहनती लेखक हैं जो अपने पाठकों के लिए नए-नए रत्न ढूँढ कर लाते हैं। उन्हें और आपको धन्यवाद देते हुए मैं इस पत्र के संग ढाई रुपये के उस नोट की तस्वीर भेज रहा हूँ जोकि कभी अपने देश में लोकप्रिय था। डॉ. देवकी नंदन को आज मैं अपने परिवार के सीनियर सदस्य के रूप में मानता हूँ जिनकी लेखनी से नई-नई और दुर्लभ जानकारियाँ मिलती रहती हैं जोकि हमारी ज़िंदगी को खूब समृद्ध बनाती हैं। पुनः धन्यवाद सहित!

श्री हृदय नारायण गुप्ता, ग्राम/पोस्ट - टेऊंगा, जिला-प्रतापगढ़ (सदर) 230001 (उ.प्र.)
[मो. : 09125823037]

सवाल जब जब, जवाब तब तब

मुझे विज्ञान प्रगति में 'सवाल जब जब, जवाब तब तब' स्तंभ बहुत रोचक एवं ज्ञानवर्धक लगता है। हिंदी में इतनी अच्छी पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं आपका तहेदिल से शुक्रिया अदा करती हूँ। मैं भी एक सवाल आपसे इस स्तंभ के जरिए पूँछना चाहती हूँ। मेरा सवाल है - 'सभी ग्रहों के उपग्रहों के नाम हैं, जैसे मंगल के उपग्रह का केबोस, डीमोस, शनि के उपग्रह का नाम टाइटन है, तो बताइये कि हमारे चंद्रमा तथा पृथ्वी के उपग्रह का नाम क्या है?'

[उत्तर : इसे ल्यूना कहते हैं - संपादक]

सुश्री मधुरिया नरवरिया, पत्नी सुश्री मयंक राजपूत, पुल तिराहे के पास, अम्बाह रोड़, मुरैना 476001 (म.प्र.)

ज्ञान का दीप

मैं एम.एससी. (जैवप्रौद्योगिकी) की छात्रा हूँ और विज्ञान प्रगति की पिछले कई वर्षों से नियमित पाठिका हूँ। विज्ञान प्रगति के मार्च 2013 के अंक में प्रकाशित विशेष लेख 'विश्व की विचित्र रेलगाड़ियाँ' को पढ़कर अच्छा लगा क्योंकि इससे मुझे रेलगाड़ियों के विषय में महत्वपूर्ण जानकारी मिली। इस लेख में कई तरह की रेलगाड़ियों जैसे मैगलेव ट्रेन, मोनो रेल, बुलेट ट्रेन, सी ट्रेन, ट्यूब रेलवे, टनल ट्रेन, थर्ड एवं फोर्थ रेलवे, फ्यूनीकुलर रेलवे तथा केबिल रेलवे आदि के बारे में अवगत कराया गया है जिनके विषय में आम जनता को अधिक जानकारी नहीं है।

विज्ञान प्रगति की उपयोगिता जितनी विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों के लिए होती है उतनी ही उपयोगिता उन जिज्ञासुओं के लिए भी होती है जो पाठ्यक्रम के बन्धनों को भुलाकर अपने ज्ञान और बुद्धि के विकास के लिए इसका अध्ययन करते हैं ताकि उन्हें नवीन ज्ञान की प्राप्ति हो सके। इस ज्ञानवर्द्धक पत्रिका से जुड़े रहना मेरे लिए सौभाग्य एवं गौरव की बात है।

सुश्री आरती भदौरिया, सुपुत्री श्री महेन्द्र सिंह भदौरिया, ग्राम-मिहौली, जिला-इटावा (उ.प्र.)
[मो. : 09837021537; 09873314029
ई-मेल : artibhadouria220990@gmail.com]

जनचेतनात्मक पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मुझे विज्ञान प्रगति का प्रत्येक अंक रोचक, अद्वितीय एवं ज्ञानवर्धक लगता है। मुझे विज्ञान प्रगति का मार्च 2013 का अंक काफी रोचक लगा। विशेष लेख में ये हवाई अड्डे काफी अच्छा लगा। विज्ञान प्रगति एक ऐसी जनचेतनात्मक पत्रिका है जिससे हर वर्ग के लोगों का विकास हो रहा है। मैं जोसेफ प्रीस्टले का जीवन परिचय पढ़कर काफी प्रभावित हुआ। चित्र के माध्यम से दर्शाया गया जोसेफ प्रीस्टले का घर देखकर अच्छा लगा। हम सुझाएं आप बनाएं के अंतर्गत कंप्यूटर कंट्रोल्ड लाइट्स के बारे में जानकारी मिली। इस लेख के माध्यम से मैंने इसे बनाया और कुछ घण्टे उपयोग करने के बाद मुझे ऐसा लगा कि यह कम खर्चे में बनने वाली काफी लाभप्रद चीज़ है। चित्र कथा में अल्बर्ट आइंस्टाइन की जीवनी पढ़कर उनके जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं को भी समझने का मौका मिला।

'मेरी चाहत थी कुछ करने की'
अपने हौसलों को शमाँ में बदलने की।
मेरे रास्ते की कठिनाइयाँ भी दूर हो गयीं,
क्योंकि मेरी आदत थी विज्ञान प्रगति पढ़ने की।'

श्री प्रिन्स दूबे, सुपुत्र श्री अनिल दूबे, वार्ड न. 7, घुघली, महराजगंज (उ.प्र.) [मो. : 09415470683;
ई-मेल : dubeyprince.ad@gmail.com]

नियमित पाठिका

मैं पिछले 7 वर्षों से विज्ञान प्रगति की नियमित पाठिका हूँ। मेरे नियमित पाठिका होने का कारण यह है कि जानकारी का जो भंडार मुझे विज्ञान प्रगति में मिलता है वह किसी अन्य पत्रिका में नहीं मिलता। समय-समय पर खास विषयों पर निकाले गये विशेषांक सहज कर रखती हूँ। इस पत्रिका में स्वास्थ्य विशेषांकों में दी गयी जानकारी किसी डॉक्टर के प्रेसक्रिप्शन से कम नहीं होती। दूर-दराज के भागों में रह रहे लोगों के लिए यह पत्रिका एक अच्छे सलाहकार का कार्य भी करती है। मार्च 2013 के अंक का विशेष लेख एड्स के विरुद्ध एक ट्रेन/रेड रिबन एक्सप्रेस समाज में जागरूकता लाने वाला लगा।

सुश्री अन्सुल तोमर, लवकुश नगर, कासगंज (उ.प्र.)
[मो. : 09810625259 ई-मेल : anshultomar21@yahoo.com]

सूचना-परक अंक

मैं विज्ञान-प्रगति का नियमित पाठक हूँ। मार्च 2013 के अंक में श्री विमलेश चन्द्र रचित विशेष लेख विश्व की विचित्र रेलगाड़ियां सूचना-परक लगा। वास्तव में बदलते वैज्ञानिक युग के साथ भारतीय रेल भी तेजी के साथ विकास की नयी गाथा लिख रही है। भविष्य में जापान, कोरिया एवं फ्रांस के समान उच्च गति वाली रेलगाड़ियां हमारे देश के पास भी होंगी। महाविभूति जोसेफ प्रीस्टले की जीवनी पढ़ी। वास्तव में विश्व इतिहास साक्षी है, जो कर्मठ, लगनशील एवं प्रतिभावान होते हैं, वे निश्चित ही एक नया मुकाम हासिल करते हैं। विज्ञान प्रगति हम सभी सुधी पाठकों के ज्ञान को प्रगतिशील बनाती है।

डॉ. अलकेश खत्री, होम्योपैथी-विभाग, रेलवे अस्पताल, इंदिरा मार्किट, जबलपुर (म.प्र.) [मो. : 09406740038]

दिव्य ज्ञान की ज्योति

मैं पॉलीटेक्निक (सिविल) प्रथम वर्ष का छात्र हूँ और विज्ञान प्रगति का पिछले चार माह से नियमित पाठक हूँ। मैं विज्ञान प्रगति को दिव्य ज्ञान की ज्योति मानता हूँ। विज्ञान प्रगति के माध्यम से हर क्षेत्र की जानकारी माहवार कम कीमत में मिलती रहती है। मुझे मार्च 2013 का अंक 'यातायात पर विशेष' प्राप्त हुआ जिसे पढ़कर दिल बहुत खुश हुआ।

विशेष लेख के अन्तर्गत 'रेलवे इंजीनियरिंग निर्माण की अद्भुत मिसाल थाल एवं भोरघाट', 'एड्स के विरुद्ध एक ट्रेन रेड रिबन एक्सप्रेस' बहुत रोचक लगे। 'राज्यस्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस 2012' ने एक नया आयाम सिखाया। इंजीनियरिंग के छात्र होने के कारण 'हम सुझाएँ आप बनाएं' तथा 'विज्ञान समाचार' पढ़कर दिल में एक नया

जोश पैदा हो जाता है। विज्ञान प्रगति भारत के साथ-साथ पूरे विश्व में अपना कीर्तिमान स्थापित करे यही हमारी अभिलाषा है।

श्री मीनष सोनी, सुपुत्र श्री ओमप्रकाश सोनी, जामलिन गंज पुराना बांध (बलिया), पोस्ट बलिया, जिला-बलिया 277001 (उ.प्र.) [मो. : 09389840544; 08896647388
ई-मेल : monubindas@facebook.com]

रोचक पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति पत्रिका का पिछले कई सालों से नियमित पाठक हूँ। वर्ष 2013 के मार्च अंक में विभिन्न प्रकार की ट्रेनों के बारे में हमें अच्छी जानकारी मिली। इसके अलावा हवाई अड्डों के बारे में भी हमें बहुत ही महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त हुई ताकि भविष्य में यदि हम हवाई यात्रा करें तो हमें उसके नियमों के बारें में जानकारी रहे। इस अंक की वर्ग पहेली, सवाल जब-जब जबाव तब-तब तथा विज्ञान क्विज़ आदि सभी लेख ज्ञान के भण्डार लगे।

श्री शैलेन्द्र त्रिपाठी, सुपुत्र श्री उमाशंकर तिवारी, ग्राम-बैजनाथपुर, पोस्ट-गांधीनगर, जिला-गाजीपुर 233225 (उ.प्र.)
[मो. : 08090291086; 09918537399]

सर्वश्रेष्ठ पत्रिका

मैं पिछले दो वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। विज्ञान प्रगति का मार्च 2013 का अंक जैसे ही मुझे मिला, मैं बहुत खुश हुआ क्योंकि यह अंक 'यातायात पर विशेष' वाला अंक था। यह पत्रिका कम मूल्य पर अधिक ज्ञान देती है यही कारण है कि अन्य कोई पत्रिका इसका मुकाबला नहीं कर सकती है। मैं विज्ञान प्रगति को ज्ञान का खजाना मानता हूँ।

इस अंक में विशेष लेख के अन्तर्गत 'रेलवे इंजीनियरिंग निर्माण की अद्भुत मिसाल थाल एवं भोरघाट' 'एड्स के विरुद्ध एक ट्रेन रेड रिबन एक्सप्रेस' पढ़कर दिल बहुत खुश हुआ। 'भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 100 साल' तथा 'राज्यस्तरीय बाल विज्ञान कांग्रेस 2012' पढ़कर एक नयी सीख मिली। 'हम सुझाएँ आप बनाएं', 'विज्ञान क्विज़' तथा 'विज्ञान समाचार' ये तो पाठकों को मोह लेते हैं। 'आपके पत्र' तथा 'अपनी बात' के तहत भी बहुत जानकारी मिलती हैं।

'जुबान से कह नहीं सकता।
दिल से फरियाद करता हूँ।
जब मैं विज्ञान प्रगति पढ़ता हूँ।
पुनः नई चीज की ओर बढ़ता हूँ।।

श्री दशमी प्रसाद जायसवाल, सुपुत्र श्री शिवपूजन प्रसाद जायसवाल, सन्दहाँ, पोस्ट-उमरहाँ, थाना-चौबेपुर, जिला-वाराणसी 221007 (उ.प्र.) [मो. : 08953022721; 09450309751]

ज्ञानवर्धक अंक

मैं विगत 22 वर्षों से विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ। इस पत्रिका का कागज उत्कृष्ट गुणवत्ता का है। इसकी सामग्री व चित्र नित नयी जानकारियां लिए हुए बड़े आकर्षक प्रतीत होते हैं। मार्च 2013 के अंक में रेल व हवाई अड्डों के बारे जानकारी बहुत ही ज्ञानवर्द्धक व नवीनतापूर्ण लगी।

विज्ञान प्रगति के माध्यम से मैं सरकार से निवेदन करना चाहता हूँ कि स्कूल स्तर पर विज्ञान प्रयोगशालाओं को सशक्त बनाने के लिए कुछ और प्रयास किये जाएं।

विज्ञान प्रगति में जो 'वर्ग पहेली' तथा 'प्रतियोगियों के लिए' स्तम्भ होते हैं वे गागर में सागर के समान होते हैं। चित्रकथा भी बहुत रोचक होती है। कृपया प्रीस्टले की ही तरह हर बार किसी एक वैज्ञानिक पर विशेष आलेख प्रकाशित करें। साथ ही अगर हमारे आस-पास व घरों में पाये जाने वाले पदार्थों के रासायनिक नाम व गुणवत्ता के बारे में भी जानकारियां देते रहें तो यह सामान्य शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्द्धक रहेगा।

श्री रमेश कुमार, शिक्षक, ग्राम + पोस्ट भिरानी व भादरा, जिला-हनुमानगढ़ 335503 (राजस्थान) [मो. : 09660102139
ई-मेल : rameshjangir72brn@gmail.com]

ज्ञान का सागर

जिंदगी में कुछ ऐसी चीजें अचानक आती हैं कि उनसे घनिष्ठता हो जाती है और हम उनसे दूर नहीं जा पाते.....ऐसी ही पत्रिका है - 'विज्ञान प्रगति'। मैं विगत तीन वर्षों से इस मनमोहक पत्रिका की पाठिका हूँ। फरवरी 2013 के अंक में छपी एक कविता 'कण-कण में भगवान' में गॉड पार्टिकल और सचिन तेंदुलकर के बीच जो तुलना की गई थी, वो बहुत ही सराहनीय थी। मार्च 2013 के अंक को पढ़कर बहुत खुशी हुई और आश्चर्य भी हुआ। इस अंक में विभिन्न प्रकार की ट्रेनों के बारे में बहुत ही ज्ञानवर्द्धक जानकारी दी गई है। 'थालघाट एवं भोरघाट तथा रेड-रिबन एक्सप्रेस' पर प्रकाशित लेख तो बहुत ही ज्ञानवर्द्धक लगे। श्रीनिवास रामानुजन, चाचा नेहरू, नील आर्मस्ट्रॉंग और जोसेफ प्रीस्टले के बारे में पढ़कर बहुत अच्छा लगा। इस पत्रिका में छपने वाले सभी लेख, सवाल-जवाब, वर्ग पहेली, चित्रकथा आदि बहुत ही ज्ञानवर्द्धक और बेहद सराहनीय होते हैं। विज्ञान प्रगति जैसी अद्वितीय पत्रिका के प्रकाशन के लिए इसकी समस्त टीम को मेरी ओर से बहुत-बहुत धन्यवाद।

सुश्री निधि कुमारी, सुपुत्री श्री संजय कुमार शर्मा,
ग्राम + पोस्ट हन्सोपुर, थाना-खानपुर,
जिला-समस्तीपुर 848117 (बिहार)

सराहनीय अंक

विज्ञान प्रगति का मार्च 2013 का अंक बहुत ही रोचक व आकर्षक लगा। इस अंक में विभिन्न लेखों के माध्यम से ऐसी जानकारियों से रू-ब-रू कराया गया जिनके के बारे में हमने इतनी गहराई से कभी नहीं पढ़ा। इस अंक में 'ये हवाई अड्डे, 'विश्व की विचित्र रेलगाड़ियाँ', और 'एड्स के विरुद्ध एक ट्रेन रेड रिबन एक्सप्रेस' आदि लेखों से जो ज्ञान प्राप्त हुआ वह अत्यन्त सराहनीय है। विज्ञान प्रगति से न केवल विज्ञान के छात्रों को फायदा होता है, बल्कि प्रतियोगी परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों को भी फायदा मिलता है। यह पत्रिका वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जोकि आज के वैज्ञानिक युग की जरूरत है। मेरे हर सवाल का जबाब बिन मांगे बहुत सहजता से विज्ञान प्रगति में मिल जाता है। सवाल जब-जब, जवाब तब-तब! बहुत अच्छा लगता है। इस शीर्षक के माध्यम से हर प्रकार की जिज्ञासाओं का समाधान हो जाता है। यह पत्रिका निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो रही है। मेरा विश्वास है कि निकट भविष्य में यह पत्रिका 'मील का पत्थर' साबित होगी। इस पत्रिका की लोकप्रियता एवं उपयोगिता की वृद्धि के लिए लेखक एवं सम्पादक दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है।
पंखों से कुछ नहीं होता, हौसलों में उड़ान होती है।।

श्री कौशल पाल, सुपुत्र श्री आदेश कुमार
महाराजपुरम कालौनी आँवला 243301 (बरेली)
[मो. : 08859277254; 08273549458]

सम्पादक के नाम पत्र

निःसंदेह 'विज्ञान प्रगति' एक ज्ञानवर्द्धक पत्रिका है और मैं पिछले 50 वर्षों से इसका नियमित पाठक हूँ। फरवरी 2013 के अंक में श्री प्रदीप कुमार मुखर्जी का लेख 'विज्ञान, प्रौद्योगिकी और वैज्ञानिक दृष्टिकोण' पढ़ा। SCIENCE शब्द की उत्पत्ति लैटिन के 'SCIRE' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है 'To Know' अर्थात् जानना। जानने से ही सत्य का बोध होता है। महान वैज्ञानिक आइन्सटीन ने कहा था - 'ज्ञान को विज्ञान तथा विश्वास को धर्म कहते हैं।' गीता (6/2) में कहा गया है कि अनुभवात्मक ज्ञान को ही विज्ञान कहते हैं, जबकि अज्ञान से ढके ज्ञान को मोह कहते हैं जिसे विज्ञान प्रकाशित करता है (गीता)।

विज्ञान प्रगति निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर हो, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ,

श्री पशुपतिनाथ, सम्प्रति डी.-25, सेक्टर-जी, एल.डी.ए. कालोनी, कानपुर रोड, लखनऊ 226012 (उ.प्र.) [मो. : 09451906726]

अनुपम पत्रिका

मैं विज्ञान प्रगति का नियमित पाठक हूँ और मुझे यह पत्रिका बेहद पंसद है क्योंकि इसका हर अंक लाजबाब होता है। मार्च 2013 के अंक में प्रकाशित भारतीय विज्ञान कांग्रेस के 100 साल के बारे में पढ़ कर अद्भुत लगा तथा विभिन्न पहलुओं के बारे में जानने का मौका मिला। विशेष लेख 'ये हवाई अड्डे तथा विश्व की विचित्र रेलगाड़ियां' अविस्मरणीय लेख लगे। मुझे विज्ञान प्रगति में प्रकाशित 'विशेष लेख, विज्ञान प्रश्न तथा विज्ञान क्विज़ बहुत अच्छे लगते हैं।

श्री मो. समीम, सुपुत्र श्री मो. सलीम, ग्राम-अमर छतौनी, मोतिहारी, पोस्ट-पतौरा, जिला-पूर्वी चम्पारण, 845401 (बिहार)
[मो. : 09470321955; ई-मेल : ecsamim@gmail.com]

रोचकता का सागर

मैं विगत कुछ वर्षों से विज्ञान प्रगति का पाठक रहा हूँ। इस पत्रिका का हर अंक बहुत ही रोचक होता है, जिसे पढ़कर सचमुच बहुत प्रसन्नता होती है। मार्च 2013 का अंक पढ़ा, जिसमें हवाई अड्डों की जानकारी दी गई है, इससे लगा कि जैसे मैं स्वयं हवाई यात्रा कर रहा हूँ। मैं इस रोचक पत्रिका का अपने शब्दों में कविता के माध्यम से वर्णन करना चाहता हूँ :

विज्ञान के गुणगान से परिचित कराती विज्ञान प्रगति।
विज्ञान के बखान को रोचक बनाती विज्ञान प्रगति।
विज्ञान की नई तकनीकों से अवगत कराती विज्ञान प्रगति।
करता हूँ ये कामना हर युग में शिखरों पर हो विज्ञान प्रगति।

श्री अंकित सैमुएल सिंह, लेडी टीचर्स हास्टल, मिशन कम्पाउन्ड फर्रूखाबाद 209601 (उ.प्र.)